Prof Refom EMs
SII. Sahilye poper VI
(1) गनाबल्यां कीद्टरां मऊ़ुलम अस्ति-
(2) निफुणः कविः कः श्रीट्रू्ण [आइीवदि
(3) परिषत कीदूर सी, दुण कण ही mom
(4) लोके हादि किम बत्सराजचरितम
(5) उद्थनस्थ मुख्यामास् कं चौगन्यरापण:
(6) सनाकल सिंहलेशदुडिता का रनावली
(न) बन्सेशरः कए - उदयनः
(8) बन्सेश्बस्य कर्टकिन. नाम किम- बात्र०्या.
(a) सिंह ले वरामालस्थ नाम किम-वसुभूति.
(10) बत्सेशर के इब अश्युपैत्ति' कुसुमचाप इव
(11) विदूषकस्थ नाम किम वसन्रक:
12. पुरः कुट्टिमं कै० सैन्दूरीक्रियते-जनेन
13. उदथ वासवदता का [ चदपनस्थ राज्ञासे:
(14) कागचनमाला का वा सदपनस्थ रूदनी स्रूली 15 सरोकर्धुकिमुट क०० चत्रों। 23
16 प्रथमाद्यु नाम किय मदनमहोत्सवः

Q LIC शनानली का Vा
17. चित्रगता सागरिता का इब मानसा उर्पनि 218 राजहंसी दू
18. कहाद्याः सन्तापं किं दूंकि श/2 लिखेनीपानशेयक
19. स न रलु सखीजने पुम्त के कोपानु बनच० कः बदति Page 98
20- कि प्रक्ष वासवदत्ता आगचती आन
21. समेता वेव तों पद्याव-कामिभीकी माधवीजताम
22. ट्रिटीयाइस्त के नाम कठ्दलीगुहा
 24. कृत्तनगुणनः कः प्रविइनि वरु० सेन के 25 तृतीयाद्रूख्य किं नाम-सड्रेतकर्ट 26 सुसझअपन वसन्न कर्य हैस्ते सें ददानि
Q1. वस्नुर्यारा का page 164- page एकरे का. page 164 -
s (j) ryp me $(\mathrm{m})$ gone वसिवद्रताथा सरख
28 विजयवर्म क० - page 164 शमष्वत: भागिनेय: -2-

शंत्ञानकी

 उ०. कोन्द्रजालिक बन्सदाना शिका म1 31. रनाललया: विता को दूरित्रा हैन

33. स्नकेषु रननाबली सिपकेप कमिन किजागे सेनिति
34. शन्नालया है जा पका" कह उत्रोतो
35. उदथन: कीदुश: ना लक" सीर्लािति चwanc ऊ
7) पादाग्रतस्नेतथा ।।
(2) औन्यक्येन कहतलना 112
(3) विश्तानविग्र हन-थो, ।हि
(4) उर्धट्टि द्रुम कान्तिशि: ।1
(5) उदामोन्क की काम, 214
(6) लीलाड़जूलपद्या 218
(7) किचा याई पूर्ब शूर्धन्दु 219.

$$
2 \text { नाबली - sII } \sqrt{ }
$$

(8) कैष्ब कृच्छूप्रादुचुण व्यतीये 2110

अ. द्वन्दा: प्रथुतैरीक्टता स115

- श्रीरेषा 2117

1. बाजा: पश्य 313
2. किं पद्यस्प उुचिं नहत्ति $3 / 12$

4

$$
\text { शन्नावली SII. } \mathrm{VI}
$$

साखुयाता -

1) औस्सुक्येन कहत्बरा.
रज्ञाणल्या: मड़.लम् इदम इदम
आशीवादात्मकम आस्ति।
अन्वयः औसुक्येन कृतलरा, सह भुवा
ब्रिया व्यावर्तमाना, ते: कैष: बन्युजनस्य
बचनःः युनः आमिमुख्यां नीता, अगे
बरं द्धा आत्तसाहवसरसा संरोहत्यु

कका हसता हरेण क्लिष्ष गौरी
व: झीवाय अस्तु।
व्याख्या- पतिगमनौत्तुक्येन हेतुना कृजा करा सस्थाः सा, सह अवतीजि सहमू० ही: लजुता तथा व्यावर्तमाना प्रति नेकृत्ता तै तै० प्रेरणानुकूलः अनेक बब्दुजनस्थ मात्रादे: बचन० फनः अगिमुखू्य नीता अगो परो सागो वर हरं दृष्वा आता आह्बसरस, यस्या सा संरेहन
5
रनावली डा VI

पुलक पस्चाः साडनेन सान्विकमाव: प्रकारीतः हसता हरेण ल्रिथ्राड5 लिड़ित गौरी वः युष्मांक झिवाय मदुलाय अवतु। अगा-सुक्यादीनां व्यभिचारिणा स्ववाच्यलं न दोषः-यतो हि कृतासरह वैः घनुभाव्वः झटिति अन्सुक्यसे स्कृर्ति मर्वति। सं भातो प्रद्तारी रस०। कविविषया रतिर्भवि: मरख्य:। इादूलि विक्रोडिते छन्द्रा।
(2) विश्रान्रविग्रह कर्था - 1/8

रतावल्या: प्रथमाई్ मदनोन्सवं
पौरजनामोदगचावगन्त, प्रास्तेनं राजानम् उदलनं ज्ञात्वाSSमासस्य यौगच्य रायणा पदमिदम्।।
अन्वय:-विश्रन्तनिग्रहक थ: रातिमान

$$
\text { श1.11 } \frac{1}{2} \text { ? }
$$


1िय पै परी 1िमी निचम होन्सबदलाय


$$
\text { श } 11111 \text { वि } 1,41,34 \overrightarrow{11} \text { विग्रिथ्य }
$$

$$
41121 \text { तित थस स ब केधर: } 9 \text { उपमान }
$$

मागाती हि म्ञाजता निग्रहस्य कारीरस्य
1701 A गेप मान्यकान्कतबतात यस्य
गक्त ज्यम शति श्रजानियय क्रेम
पथना औरे चपत रति, कामपनी, तद्वाने।
जन मी िी जा थेक बचन क्रजानां चित्रे
समन प्रणातित कारिवार पक्षे मन

$$
\begin{aligned}
& 12 \text { चण्नार प्रिय वसन्तनरत्ना भा } \\
& \text { कित्रतो स्थाकान प्रिय बसन्तक } \\
& \text { करन्त } 15 \text { तु पस्ल सः निजस्याल्मि } \\
& \text { पर्युन्युकः दर्ईनलालसः निजस्थालनः } \\
& \text { मही.सनदश्नाप कूसमचाप : कासदेन }
\end{aligned}
$$

 सेखानुप्राणिता उपमा। जयम त1िती।

$$
\text { घणन्दा } 11
$$

$-3-$
उद्धद्विद्रम 1/1y

रनावलयां प्रवमाक्रे शजोप पन
मदनोत्सवे मकोे मकरन्दोधाणरण
श्रियं वर्णयाति उद्धिति।
उन्वय० उधद्धिद्रमकान्तो शै किसलयै ताम्रां। विष बिगाए कलै० भृद्रावलीविसमे० अचिसेता अविशाद व्याहार लीलागृलі मन्तयाने लाह्रतिचल० इाखा समू है० मुन्दुः घर्णन्तः अमी द्रमां मत्र प्रसड़्मधना अन्तनिं प्राव्य मत्ताइव अमी केता: ।। क्याख्या-उद्यताम् उदयं श्राप्नुलतां विद्रु माणां कान्नय इव कान्नयः येषां तै: किसलर्य ताम्रों विषें कानिं
[1H0
सतावली Siv

नामायमतपक सेगालीनो समरपक्तीनों

 $11+11$ नी आतम आवृतिभिधलेः शास्थामकै सा खचना समू हैः मुद्धः पुन:
प्रेतित अकी वक्षाः मध्रप्रसड़ज बसन्त पतातांतो स्राथ्य त्सम्बा की मधु $4 त+$ से मांक्य आक्य तेन भान्ति
प्रान्य उल्मतानस्था प्रक्य मत्रा इन दमाते जो डैसि होष ।

का अल्पेता क्षेषधालंकारो।
मान्मिनि कीजित adन्दा"
(3) बाणा पइच 3/3.

सागटिकानिरह्धिए उदयनस्थ कार्म पदी आ कोशोडिम।

111111 11 पमीय पन्ता तोणी नियता:








 क्यमादिय निन्मयक्ष कासंग्याजन

 प्रती की की चानत तन्त वारि विषने Saुन दिजती विपीती कृ्वमख्यागिकिति स्रें मघोनी कोषण ( पय्मात्कारणना .10.
रन्वानली का पता

असंरणनः दरहः अपरिमिकी: अइएरण। कामिजन: पस्चतां पत्वसंख्यावन्तां मृत्रुन नीता ।ददनानी बारो पम्चल तदस्मास्लिति विरोजा। यकते त्पता लेषा़ उ. माद है रावा।
कें पद्य कचिम्ट 3112 उदप्व० अव

$$
\begin{aligned}
& \text { पद्य कचिम्य उदपष अवगुण्ठनवतीं } \\
& \text { रनाबलया: हतीयाद बसनता }
\end{aligned}
$$

सागरिकोज्नि मत्बा तस्थाः सौन्दर्यतिइायं प्रकटथिनुं चन्द्र परिहसाते-किं पद्रस्थेति
अन्वयः - पद्यर्य सुचिं न हान्ति किम। नयनानानन्दं बिद्ते न किम्ट आलोके मात्रोण इष केनन रु्य वृद्ध वा ना कुरेन किम । तब वक्त्रोन्दो सति पन् अपर रीतांइु उज्यृभन्ज। अमृत्तेन चोदिह दर्प: यात- $\sqrt{\text { बिंबाघरे आस्ति माँ }}$ पद्मस्य खचिं कानिं न हान्ति किमिय
$+1111$



 बताबतो1 1 समया मन इशकेतास्नस्ल
 किता चन 1 बन बनेनही सनि अपर: जाती परन्दु संबन्चु उप्टयते -
 कमझतीन मापी पन्देगतमास्ति सागिकायं बहाम गीति दर्षो मतेनाल चद्विंबाद है मदर लोन्तात प्रसिद्धि: जन्यं इति पाततो वपनिदेकाल कार धन निं: कपकम किंवाधयमि सत्रा "मा रुचकथो सन्डेहसंकर:। सार्दूलकिकीडित adol
Q शाइल्याने प्रन अवनादिका S-बल : अन्तयाजय यारेप बपारतया इति क्रम:।
।े

ㅂQㄴIC
शग्राबली डs. VI
चतुथी द्वास्य नाम किम--मेन्द्रजालिक

जह अक्रकणनयाम आद" अवलारिका अन्ते उपसंहार:-महये-प्रोकित लेखनीयम श्रीहर्षपरिचयः प्रेक्यते
कथापात्रपरिचयः
उदपनः

रुपकेषु नायकस्य चलारः

$$
\begin{aligned}
& \text { अदास्सान्ति। ने-धीरो दात्र घीटोद्य } \\
& \text { दुख्यन्तादिः घीरोद्सत मोमसेनादि: } \\
& \text { धीरलालित उदपनादि? घीरशान्त: } \\
& \text { जीमूनवा हनादिः। तन परा यन्तासेद्यि } \\
& \text { अर्शन्सर्व कार्य मान्रोद्वारा कारयति } \\
& \text { सै उन्सवक्रियुच घीरना लित: } \\
& \text { उदयन स्सवं कार्य मान्रिणा यरैगचन } \\
& \text { रोन कारथति।तदुम्तं पोगब्चरा- }
\end{aligned}
$$

$$
\begin{aligned}
& \text { शना कली SII VI } \\
& \text { योोजा से इदानों सफल परिश्रमोंटिम } \\
& \text { संवृत्तः इति। प्रथमाङे रजाञड है } \\
& \text { ' राज्यं निर्जितइाञु योग्यसाचि के न्यस्त्र: } \\
& \text { समस्ता यच इति। } \\
& \begin{array}{l}
\text { उस्सकत्रिय:- प्रकमाक्षें मदनो न्सव } \\
\text { किचार: । }
\end{array} \\
& \text { अनुरागी सागारे काच } \\
& \text { विरहदुःगय ति प्रतििकाननमूं }
\end{aligned}
$$

(3) दोकीण: बासबदत्तालं सागदि-
कायाच सम प्रेम प्रदूर्याति
(4) सुक्ष हैन्सल: किदूक राइ

अच्या
उपसंतार० 11

Prif Rofun LM
P-SII papert gl.

$$
\text { आमिबानदाननतलम - } s \pi \cdot I
$$

 का गानति हस सदिय।
(2) कक्यन्तर्प पष्जयाः जाय किम ? वसुमती
(3) इम्याज्रे बीव्य जन्तु; कीटदो सना़े
4. शात्रीन्देन कः प्रनाति गन्जक है पर्यु-स क्
(5) आटितगममिगार: क: $\{5 / 4$ आदिशेष:
(5) वक्षांकात्रि: कः
(6) राज्य के कीदूरों अबति. 516 स्वहस्तथृत्त

(8) इकुन्नला कीदूखी $511 /$ दुतवहपरीं
9. स्त्रीणामानुषीज के हूर्तिमती सल्क्रोए

10 स्वमपसजालम आक्यम, दे 11 आ। त्रपटुका
गहम

स्वमपसजालम अन्यः द्विजः के

$$
\text { पोषयान्ति- } 5 / 23 \text { - परमृत्ञा : }
$$

11. अज्ञातह्दयेषु सौह्हद गड क यवति 5725
12. श्रोत्रिय: कीदूzा: अवति 6।" परीय कात

$$
-1-
$$

13) पानुमी कानमेनायाः सग्री यक्पननेन के उन्मन, प्रतिजिद्र :- बसन्टो क्या 11 कुत्य. ताया क्रव्य नाय किम्-आर्यविक्न 16 क्रत अवता निमेक्षिक:- के के बदति 14. नि रन्योपनिपातेन। विनियाता अस्य वाक्यस्त्र कि तान्यर्यम कुस्ब दुख 1द मनो चाः कीद्धाः सवन्त्रि $6 /$ मु०बर्टने 14. अचेनन किं न कीक्षाते 6/14 गुणमू 20. गयी पित्र्यं दिस सिक्थम हीते-ताप्पर्य लिख्तन-पितुः घन जिता मृजहतर गर्स स्थ

21. दुव्यन्नस्प पितर कीदझम्ट उदक के

पिबनि $6 / 25$ - अश्नेमिश्रक
22 हैसा किं करोति 6130 क्षीई जिबात
Q3. इन्द्रस्प पूत्र: क० $7 / 2$ तनिस्रः अना थ जाते
24 माताली के इन्द्रस्य सारविं
25 अनति क्रमणी यानि श्रोयांसि
कं के बदति (Near b bloko 7 l राजा याललिम
（2）21，2018 1 2 +28






$$
\begin{aligned}
& \text { 81: वृवन्बेन तीइ आी का क्तला हैका } / \mathrm{Z}
\end{aligned}
$$

$$
\begin{aligned}
& \text { विग } 3 \text { 亲…ी居 }=
\end{aligned}
$$

क्रे क्रशगासे क्यिना करचप औोगः：
शतकपगतः 7122 रोहितीचोग：

35．दाहापणो का

36 पौनगी का
（a）7／28

$$
\text { a) } 1 \leqslant 444 \text { की }
$$

37．नित्यं स स्सागागामू－अन्1 जितयं केम्ट न। 29.

क्य सी








1 रक्षापे बीचा घ?


(4) मचनिते बमात को 12
(5) स्रिणमया कीजितद के कम 5123
$441+11811 \quad 1$



(4) पौल तोन विस्यूप्ता 6/23


1ि सेशीजि। द्यासनि ह/श
18 महलनेजशत $7 / 15$
14. पलोगपवरी 7/16
is प्रता तो 7/35
दिधमानेण काजिचन हैम क्ल्यार्यानानि
(1) स्याजि नीज्य -

$$
\begin{aligned}
& \text { हंगपदिसाया गीत श्रत्णन्क कलोः दुक्य } \\
& \text { व्तस्थोनिशिचम । } \\
& \text { अं्वयः भाशिता अपि जन्तः सम्याजि }
\end{aligned}
$$

अं रा डा।

कीज्य मकुरान शब्दानट निड्रम्य च पर्थ पर्युत्सुको अवाति ।ताधेनओ) मावा स्किरा जननान्तरसौह्धानिनून स्मरति। व्याख्या-सकिनः आपीइति अक्रक्य समुक्चयेक अपिना दुः रिनो पि समु -चचीचन्ते-तेबां का कूोति थाबत्। जन्तुरिप्रनेन समस्तथ प्राणिनाम अवस्था सूचिता रम्याण वस्तूनीति विदोषणान विदोष्यप्रत्यय : नीज्य मधुरान नि रामन क्रिचा सामथचन शबजार्पकान सब्दान निझाम्थ पर्य सुक उत्कणितो अवति। तस्माज चौतसा बोचि पूर्वमव्यक्त रुपा मिजि यबन याव रुपेणासनि स्थिराजि सूरमभानतथेजि यावज जननान्ति ?ीजि
प्रकरणापूर्वजन्मानि विधमानानि
सैहदानि स्वसंबद्ध बाचयवादीनि

(2)
कारद्धतद्य पहागिदम ।

$$
\text { उन्यः } \lambda \text { रचात: आक्यन्तम इन। }
$$

कडचिश अदुचिम इन श प्रबह्नः
अक्रम डब स्यानिः बद्धम डन
अस्नासि,जम अर्बमि।
अवमोति श्रेपाबलात अह

दारद्वाः कार्जइड दुष्यन्तल नरण
स्पातः सटरनान उड्यकत्त कौन हैल लोपनमिके पुत्प्रेक्षापे सल्ब ।
यकाधी लिर्मतोडपि अडडचिं मालीनम इद। श्रबंदूः क सक्षोत्रितः सक्रम इ्व

$$
\begin{aligned}
& \text { घ ज्नच, भिदे चज्ञात }
\end{aligned}
$$

$$
\begin{aligned}
& \text { हुलाज्तापान पु श्य पैरी प्रनिलस्त }
\end{aligned}
$$

(M) 116 3 दा दit 511

$$
\begin{aligned}
& \text { यन्सरणक्तन साडिजगयमन्नान } \\
& \text { गवैमि\| छत्र्रोता चब बन्द का री। }
\end{aligned}
$$

3. सन्रोणामा़ी क्षित पुलम
आगिज्ञानदाकुणल स्य पसमाे

त तोंबन संवर्धितोड नसितोड जन जन को निसे इकि गौतम्या बाक्यं का ता हुक्यन्तरयोमें रिच स्तीणामिति।

अन्वयँ - अमानुकीकु स्तिणान अशिक्षितपदुवं संद्ययते किम्नत प्राति बोघवय्प० । अन्तरिक्षगमनात प्रा क स्वम्ट अपलजातम अच्चैं द्विर्ज ! परिपो षयान्ति किल।

व्याख्या अमानुषीकु मान ज्ञा
मनुषयत्वजाति मिनासु स्त्रीक्नि

3 3, 511 $5 \sqrt{1}$
 सिद्ध सामखूर्ता स्य० है धनाे किमान बनतनां या: प्रतिबोधित्षः पन्युद :
डलत्रेय मानक्य डीि जानतर। अभा
नुबीलिषपालं कुलन्रोन चोजयति -
क्रागितिं। परग्ता: कोकिला: अन्ते
रिक्षगमचात प्राक प्रनमेवाकरिद्यानांक
उ उश्ययन इक्यन्पक्ते प्राडोन स्वम
अपलजानमपल्पमूह मन्थैः दिजै०
का कादि।मेः परिपोषयान्ति किलेऩ
प्रसि है। ख्यचावोती :। वसन्ततिलका
चन्द : . 1
(4) आ जन्मन:-

आभिज्ञान शाकुन्तलस्प पग्रमाकें, महाराजस्य दुल्नस्तथ अभि भो० किमन

$$
\begin{array}{r}
\text { यवतीत्रस्तयान अस्मान संगृजा क्षेर० } \\
-9
\end{array}
$$

 कासेतो वाये का जनमन्ट
 अप्रमाणग। थैं पराभिसन्वानम विधाइतियदीधार, के आपतान: किल्त सन्ती
वांक्या आ जस्मन ह जसमत
है चन्म जन्मन : प्रग्टति थोजनए दात्यं
जो जै परवनना मादिकितोड नहीनांडड रम्याता

T $v$ यूलनिधि अन कन सजननस्तस्प है है बचनमप्रमाणฝ थै: जने: परेथाम
… $\because \frac{y}{2}$ आभिसन्चाने बनचाम उधी





गीर्वाणवाख्सये विविधविषयानघिकृल सांगोपांग विविच्य विरचिता नैके ग्रन्थाः। एकु ऐतिहासिका अपि बहवो विद्यन्ते। अथापि न ते तादृशाः समयनिर्णयक्षमाः किन्तु प्रायः काव्यायन्त इमे। अतः कसाभ्यिदैतिहासिकव्यक्तेः समयनिर्णयनं त्वितिहाससंशोधकसायासमयं कर्म। एवं बह्बायासलव्धादल्पवृत्तादेव व्यक्तिविशोषस्सैतिह्यमनुमीयते। दृत्टिपथं नीयमानायामस्यां नाटिकायां प्रथमाह्कस पश्चमपयादस्याः कर्ता श्रीहर्ष्त्तथा स राजेति सूत्रधारोक्तेश्रावगम्यते। अतो नाधिकमस्य वृत्तमत्र ग्रन्थे ग्रन्थान्तरे चैतद्रविते वा दछयते।

गीर्वाणवाह्झये श्रीहर्षाभिधाः पघ्च पुरषास्ते च यथा-१ नैषधीयचरितकारः। २ काव्यप्रद्रीपकारस्य गोविन्दठक्करस कनीयान्त्राता। ३ धाराविपभोजराजात्मजमुंजराजस्य पुत्रः। $\succ$ काइमीराधिपतिः। ५ कान्यकुब्जस्थानेश्वरयोरधिपश्वेति। एषां कतमो रतावलीप्रणेतेति तावनिर्णींयते। आघयोद्द्वयो राजत्वाभावान्न तौ तावदेतदून्थकर्तृत्वमर्हतः। अवशित्टस्य च्र्यस्येदानीं विचारः प्रवर्लंते। काइमीराधिपतिरेवास्याः प्रणेतेति चुइल्सनस्य तर्कः। स तु शालिवाहनस १०२५ अब्दात् १०४७ अ॰दान्तं भद्रासनं मंडयामास । क्षेमेन्द्रेणौचिल्यालंकारग्रन्थे रनावल्याः प्रथमांकस्याष्वमं पघं तथा द्वितीयांकस्य द्वितीयतृतीयचतुर्ध्वादशापयानि समुद्धतानि। कविश्रायं शालिवाहनस्य दशमशतकमध्ये ब्यासीदिति बुद्धरेण सीयवृत्तांतग्रन्थे निर्णींतम् ( >५ पृष्ठे) ततो रतावल्लीकारः श्रीहर्षस्ततः प्राकालिक इलर्थादायातम्। एवमयमप्येतद्नन्थकत्तृत्वं नांगीकरोति । राज्रो जयापीङस्यामाल्यो दामोदरगुप्तः खीये कुट्टिनीमते रनावल्याः प्रथमांकान्तर्गतं चतुर्विशं पघनुद्दरवति। जयापीडसु शा. ७०२ अब्दात् ७३५ अब्दान्तं सिंहासनमलंचकारेति केषांचिन्मतमू । पंडितदुर्गाप्रसादस्गु शा. ६७७ अब्दात् ७०८ अब्दान्तं सिंहासनाधिष्हितमेनमभिसंधत्ते। कोप्यसु नामास्य समयः परन्तु शालिवाहनस्य सप्तमे शतके श्रीहर्ष्यावस्थानं न ततो निश्रीयत इति तावन्निर्विवादम् । (धाराधिपसमयस्तु न संशयविषयः।)

अथैतर्हिं कान्यकुक्जस्सानेश्वराधिपः श्रीहर्ष एवावश्रिष्यते स एव रत्रावलीकतैंति गम्यते। अयं शालिवाहनस षछ्ठे शतके वयुधां प्रशास्ति सम। स्थानेश्वर-

सिंहासनसंस्थापक: पुष्यभूतिनांम कबिद्यूपतिरासीदिलेतावानेवाययावत् संशोध:। परन्तु ततः परं कियता कालेन हि श्रीहष्ष: समजनीति न ज्ञायते । अथापि हुणेरुस्तादिते गुग्तान्वयेडयं वंशः प्रथां प्राप्त इलेतावन्निश्थीयते । प्राचीनगिल्खाऐेख़ान्निम्नर्निर्देषोे वंशवक्षो निष्पयते:-

५ (द्वितीयो ) राज्यवर्धनः। राज्यश्री $\times$ गृहवर्मा। ६ हर्षार्धनः ( श्रीहर्षः ) । $\gamma$ प्रभाकरवर्षनः $x$ यशोमती देवी । २ ( प्रथमो ) राज्यवर्षनः $x$ अप्सरो देवी। 9 नरवर्धनः $x$ वज्रिणी देवी।
-श्रीहर्षस पिता प्रभाकरवर्धनः मुखेन बुभुजे भूलिम्। अयमात्मानं परमभद्वारकमहाराजाधिराजपदेन विभूषितवानिति श्रिलालेखतोऽवगम्यते। शा. ५२६ अबद्दे दिवं गतेडस्मिनृपे तन्पुत्रो राज्यवर्धनः सिंहासनमारूहः। महीं प्रशासल्यस्मिन् तद्र्रात्रा श्रीर्षेंण निजिताः समीपगाः प्रदेशाः। तेन खख्यू राज्यभ्रियाः पतिं गृहचर्माणं मालवेश्वरेण देवग्गेन निहतं श्रुत्वा तं विजेतुं युद्धमुकान्तम्। युद्दममेनानेन गौडधिपतिहस्तात् भ्रातू राज्यवर्धनस वधं समाकर्ण सिंहासनारोहणानन्तरं गौडाधिपं विजेतुं क्रकृतं युद्दकमें भातृब्ये भंडिनि समारोप्य राजधानीमागल सिंहासनमधिष्टितम्। शा. ५२८ अढ्देडनेन स्थानेश्वरं विह्यय कान्यकुबं राजधानीकृतम् । समयेडसिमन्नैक्वर्यौरहलश्टंगमाहूढोडयम् । उत्तरदक्षिणयोहिंमाद्रिनमंदे प्राचीप्रतीच्चोर्श्हहजाइतन पुलकेशिना विरोधं भ्राप्य ततश्थापत्परंपरामासाय्य तैनैवाभिभावितः। न ततः कदाचिदप्ययं पूर्वामवस्थां प्रतिपेदे। प्रायो युद्धन्यापृतस्यापि न्यायेन राज्यं प्रशासितुरस्य निखिला प्रजा प्रमुदितेति हुवेनेत्संगवर्णनादवगम्यते। ।रावल्याः प्रथमांकस्य नवमे पघेडस सौराज्यं सम्यगालिखितम्। क्षीणेडपि राज्यै?्वर्ये वाग्देवीप्रसादपात्रस्यासेदानींतनोऽपि बृत्तांतो हददयस्सर्शों वर्तंते। निलं पंडितमंडळमंडितैव वाइ्घयैकान्तिकमक्सास्य परिषद् । खाश्रितः कादंबरीकारो बाणः पारितोषिकया सत्कृतध्वानेन।

नायं केवलं पंडितपोषक: किन्तु खल्पेडप्यवशिष्टे काले प्रबन्धाननेकात्निबध्राति स्म। प्रंथकत्तृत्वेडस्य केचन संशोरते। मम्मटप्रणीतकाव्यप्रकाशगतात् "श्रीहर्षादेर्थावकाबीनामिव धन" मित्युल्लेखादन्यः कोऽपि धावकाख्यः कविः भ्रीहर्षाद्वनमादाय दावुर्नाम्ना नाटिकामिमां प्रकाशयामासेति चानुतिमते। परन्तु बाणवर्णितेतु
 पीर्सनामिप्रायः । काइसी प्रांत्राप्तपाच्चीकाव्यक्यकासपुसके धावसस्साने बाण-



 समर्णणं नांजसम्। यदि नाइकतिकयेण प्रवभेप्रा वाण सामविष्यत्तसतोड़ी प्रति-

 णालै पारितोपिक्तिति प्रतिपादितं दव्यं न भ्रन्थक्यार्भम । येपां रताबकीस्सपयाना-
 मस्या अथी पयानि क्षेमेन्द्रसौधिलाबंकारे पः्ध पयानि दामोदरगुपस पन्ये काति-
 कटीकायां भावबोधिनीसमाख्यायां मधुसूदनधब "माउनराजोजबिनीराज्यातिकल

 तस्स जामात" इति स्पष्टे निर्दिचति।
 विक्रमादिलादलिनः । २ रनाबहीमाहबिकाप्रिलित्राम्यादन्नाबकीमउउंबाय काळिदासेन विरवितं मालविकान्भिलिन्ं। ₹ भासो भासको धावकरेति नामत्रितयं

 परीक्ष छान्चोपयोगार्थ प्रधिते रराबकोपुलके चैतेवां मतानापुपर्भमसिति राजरोबरक्षायस्यमेकमतनतरणं सीचकार परे न किमपधिकं विश़द्यामासा





 पचन्रय पुपलन्यते।
 युज्यते। प्रियदर्शिका र्नावकीच नाटिके नागान्वन्बू नाटकमे। र्राबल्या: क्यानकं


देवक्षेमेन्द्रयो: कथासरित्सागर-वृहत्कथामंजर्योंन कोऽप्युपयोगः श्रीहर्षस्य संभाव्यते उदयनवत्सराजस्य प्रियदर्शिंकया प्रणयठ्यापारः प्रियदर्शिंकायां वर्णितस्तथाऽस्य प्रकार एवात्र ग्रथितः। द्वितीयेंऽके चन्द्रोदयवर्णनं तृतीयेंऽके संग्रामवर्णनं च मनोहारि । तस्य समये बुद्ध संत्रदायस्य प्राबल्यादयं ब्राह्मणपंडितैबुंद्धमिक्रुमिश्र खसंसदमलंचकारेति हुवेनत्संगो वर्णयति । ततश्रायं सकृतौ बुद्धधर्मकल्पना अंगीकरोतीति नासांप्रतम् । नागानन्दनाटके प्रसंगानेतादृशान्विलोक्याSयं बौद्द इति हॉलकॉनेलाभ्यासनुमीयते परन्तु रैवसंत्रदायस्याप्यत्रोह्रेखात्तत्रामादिकम्। नागानन्द्रत्नावल्योनैंक: कर्तैति मॅक्क्डोनेलो मन्यते परं न किमपि प्रमाणं पुरसकरोति। नाटकदृध्या तु नोत्तमां श्रेणिं नागान न्दमारोहति। नास्य कृतिषु कालिदासभवभूल्योफज्वलप्रतिभालाभस्तथापि युद्धादि विविधविषयक्यापृतस्यास्य राज्ञः प्रतिभेयं न न्यूनां पद्वीमर्हति। इति शिवम्।

पदुपजाव्य प्रादुरासन्घहूनों कविमकाण्डानों प्रन्था: 1 संस्यां च नाटकायाउ।
 नाटिकाया अस्याः कर्तृव्वामिधानादीनामुपन्यासः। तरो विष्कम्ने मात्यस्य यौगन्धरायणस्य प्रवेशास्तन्मुखेन च पूर्वृत्तस्य वस्तुनः किमाषि निवेदनम्। वद्या। वत्सराजे महीं शासति केनापि सिद्धेनादिष्टे सिंचलेश्बरस्य विक्रमझाहोंनृृते दुरहितू रत्नावल्या यः पाणिं ग्रहीष्यति स सार्वममो राजा भविष्यतीति। ततस्तत्प्रत्ययात्तन मन्त्रिणोदयनस्य स्वामिनोऽर्थ बहृवारं प्रार्थितोऽपि विक्रमबाहुः प्रथमपरिणीताया देढ्या बासवदत्तायाश्चित्तेंदं परिजिहीर्षनास्य प्रणयं स्वीचकार। तदा लावाणिकेन वहिना वास्तदत्ता दग्धेति प्रसिद्विमुत्पाद्य यौगन्धरायणः सिंहलेश्बरान्तिकं बाभ्रब्यं कर्चुकिनं पुना रत्नावल्रीं प्रार्थयितुं प्रेषयामास। प्रदत्ता च रत्नावत्री सिंहलेश्वरेण पश्यान्तदमात्येन वसुभूतिना चाभ्रंत्येण चं सहागच्छन्ती समुद्रे यानमझ्धांन्नमझा। कि तु दैववशात्फलकमासाद्य जीवितं धाइयन्ती सा केनापि तोशाग्बीयेन वणिजा सिंहलेग्यः प्रत्यागच्छता संभाविता रत्नमाल्यं च तल्कण्ठगतां विलोक्य प्रत्यमिज़ाय कौग़ाम्बीं प्रापय्य यौगन्धरायण हसेत समर्पिता। सोडथ सागरतः प्रातंयं दारिकेति भणित्वा तां सागरिकेतितम्रा परिज्ञायमानां देव्या वासवद्तायाः परिजनत्वेन स्थापितवान्। इमं कथांशां ल्धु निवेद्य निष्कान्ते

बैगग्न्रायणे बस्सराजबिदूपकयोम्मदनमहोसबवं सादरं च सानन्ं चावलोक्यतोः प्रवेचः:
 दत्तायाः संदेशां - 'मृृत्ता मदनोस्सवेंजन बड मया मकरन्दोघानं गत्वा रत्ताशोकपादपतले संस्थापितस्य भग्गातः कुमुमायुषस्य पूजा निवर्तंयितित्या। त्रार्युप्रेण संनिहितेन मवितत्यम् ' इल्येवंविध्य समुपुख्य यावच राजा तत्र गच्छति तावक्रासवदत्ताइपि सपरिजना तचोपस्थिता। परिजनमध्यगतां चाद्युटमनेरमलावण्यां सागराकां
 क्रु्नचिदन्यन्र प्रेतितवती। सागरिका तु मदनपूजाकृतृल्यान्तचित्ता तर्वैव प्रच्छन्माडतिषत्। वस्सराजं हष्न्वा च तर्मिन्बद्धभावा बभूव।

द्वितियाङे प्रथमं ताव््ववेगके हुसंगतानिपुणिकासंबादाज्ञायते यन्मदनोल्धि-
 ततस्तथाविधां नायिकां सुमंगततोपातिष्त्र। सागरिक्याडSलिखिते बत्सराजे बद्दावं ज्ञात्वा सुसंगताऽवि तंपम्भ्ब सागरिकामालिखितवती। ततो युत्त्या ज्ञातसली़दृवया
 सेधाविनी नाम सारिका घभूब। अभान्तरे कोडपि वानरो मन्दुरायाः पभ्रहसयैवैव दिशागमिष्यतीवि शाब्क्योमे निष्कान्ते। सारिका च वानरेणोद्धाटिपपज्डरो ततो बस्सराजविदूषक्ती प्रविशतः। तयोश्र समीपे वृक्षस्या सारिका यानि मदनपरवशतरया सागरिक्या वचांस्युन्कानि तान्येय भणितुनुपभ्स्य सर्वे तहहस्यं तयोः भवणपथं प्रापयामास। उड्डीय गतां तामनुपस्न्तो दावपे सागरिक्या ववराभान्तया विस्मूतं
 प्रसान्य तन्य सागरिक्या संगमं कारितवती। ततश्र बासवद्तागमनमयेन निफ्कत्ते
 निष्कान्ता च साडक्रिवैव प्रसादम्।

तृतीयाङ्के प्रवेख़क आदौ मदनिकाका|्बनमालयदोः संवादेनेदें ज्ञाप्यते यद्राजानमखस्यगररों हृ्वा वसन्तकः सुसंगतया सह संकेतं कृतान्। यथा—सुसंगते न हि सागरिकां वर्जययेव्वान्यलिमफि राहोइसस्यवायाः कारणं तथ्रिन्तयान प्रतीकाररमिति। तया च प्रयुक्तं यथा - विरचितवापवस्तावेषां सागरिकां गहीतावाहमपि देन्याश्येच्याः काश्āनमालाया वेषधारिणी भूत्वा प्रदोणे माधर्वील्बामण्डं समागल तन्वैन तया सह भर्तुः समागमं संपददयिष्यामीति। एसं संकेतमनु वसन्तकेनानुग्भ्यामानो वस्तराजः प्रसृते विमिरसंघाते रजनीमुखवेलायां माधवील्तामण्पमुपागमत्। त्रैव चौपस्थिता कथमणुपलक्बो दन्ता देवी वासवद्ता। ततो वाषवन्त्तामेव संकेतिनीं सागरिकां मन्यमानो राजा यावत्पणयवचनैस्तामाराधयिनुनुपचकमे ताक्स्सा सरोपमवगुण्नमपनीयात्मानं

दर्शितबती। निफ्कान्ता चाकृत्वैव वर्तुः प्रसादम् । गतायां च तस्यां वासबद तावेषधारिणी सागरिकैकाकिनी तमेबोदेशां प्राप। कि त वेव्या आत्मसंकेतो ज्ञात सि समुपल्य निराशाकान्तद्दयया सात्मानभुद्धध्य लतापाशेन व्यापादयितुमुपचकमे यावत्तावद्राजा विदूषकोडपितां हछा सहसोपसृत्य तस्या आरम्मं निफ्फल व्यदधाताम्। एवसिन्नेवान्तरे जातानुतापा देवी वासवदत्ता राजानमनुनेतुं तनैव प्रत्यागतवती। उमयोश्लमे लनं है्वा भृरां संकुद्धा तेनैव लतापाशोन विदूषकं मर्तुः साहाय्यकर बद्धा सागरिकामग्रे कृत्वा निर्जगाम।

चातुर्थाड्के प्रवेशके सुसंगता "सागरिका वासवदत्तयोजयिनीं नीयत इति प्रवादं कृत्वोपस्थिते डर्घरान्रे कुन्रापनीता तन्न ज्ञायते। इयं च रत्नमाला सागरिकाकण्ठस्था तया जीवितनिराशया आर्यवसन्तक्स हस्ते प्रतिपादयेति भणित्वा मम हस्ते समर्तिता। तदङ्गीकर रोत्वेतां भवान्" इति विदूषकेण सह संलापं कृतवती। विदूषकोडपि तां गृहीत्वा राजञः समीपमुपससर्प। सागरिकायाश्च यथोपलन्धं वृत्तान्तं वयस्याय कथयित्वा रत्नमालां चादर्शयत्। ततो विरहपर्यांक्रो राजा यावच्तिष्टति तावत्कोसलोच्छित्तये गतवता सेनापतिना रुमण्वता जिताः कोसलाः इति प्रवृत्ति तद्धागिनेयाद्विजयवर्मण उपलम्य कींचित्समाहितान्तःक्करणो बभूव। अनान्तरे कोऽप्यैन्द्रजालिको यौगन्घरायणप्रयुक्त आगम्यात्मनो खेलन्लस्य दर्शानाय राजानं व्यज्ञापयत्। उपकान्ते खेलनेडसमापित एव सिंहलेश्वरामात्यो वसुभूतिः अज्चुकिना बाअन्र्ये सह नृपं द्रष्डुमागतः। ततो विश्रम्यतामिति प्रापाज ऐन्द्रजालिक: "एको मम खेल उर्वरितो देवेनावइय प्रेक्षतव्यः" इति संपार्थ्य निश्चकाम। प्रतृत्तायां च बाभ्रव्यवसुभूतिवत्सराजसंकथायामन्तःपुरेडगिरुत्थित इति महान्कोलाहलः संबभूब। ततो वासवदत्ता "मया निर्घृणयाडन्तःपुरे निगडसंयमिता संस्थापिता सागरिका विपत्स्यते। तत्परित्रायतामेनामार्यपुत्रः " इति राजानमुक्तवती। सोडवि वह्न्निं प्रविशय सागरिकां बहिरानयत् । तस्मिन्नेव क्षणे प्रशान्तो वह्निः। ततः कीं न्विदमिंन्द्रजालमिति सर्वे शशाड्डिरे । बहिरानीता च सागरिका वसुभूतिना बाअव्रव्येण चापि प्रत्यमिज्ञाता। यौगन्धरायणश्यागत्य सर्वमात्मनो निपुणमुपक्रमं स्वप्रयुक्तं चैन्द्रजालिकचृत्तान्तं समाचख्यौ। ततो या सागरिका सैव स्वभगिनी रत्नावलीति सममिज्ञाय वासवदत्ता स्वीयाभरणैस्तामलंकृत्य हस्ते गुहीत्वा देवीशबदभागिनीं च कृत्वा "गुड्जात्विमां रत्नावल्डीमार्यपुत्र: " इति मर्न्ने समर्पयामास। एवं च सर्वेषां प्रियसंजननसु अदरर्य कविरन्ते मरतवाक्येनेमं वत्सराजचरितैक देशमुपसंजहार।।

